NH Debate - 24

Uniform Civil Code

में ही है देश की इन तमाम समस्याओं का हल

कोई कहता है कि देश में पैतृक तन्त्र को खत्म करने के लिए औरतों को ये अधिकार दो; वो अधिकार दो, कोई कहता है देश से वर्ण-नश्ल व् जातीय भेदभाव को खत्म करने के लिए ये कानून बनाओं, वो कानून बनाओं; किसी को देश में अल्पसंख्यक की असुरक्षा सताती है तो किसी को बहुसंख्यक की दबंगई; कोई देश में दिन-ब-दिन बढती अमीरी-गरीबी की खाई को पाटने के लिए मनलुभावन रविशकुमार की भाषा वाले ललित निबन्ध लिखता और गाता है तो कोई समाज की रूढ़ियों को ले समाज का तन्त्र ही बदलने पे अड़ा है। कोई जनसँख्या विस्फोट से ग्रसित है तो कोई इन सब समस्याओं के मिले-जुले असर-रुपी बिजली की कोंध से डरे-सहमे कुत्ते की भांति सिर्फ कांव-कांव करके कुका ही रहा है|

और इसमें क्या नारी संगठन, क्या धार्मिक और सामाजिक संगठन, क्या तथाकथित डेमोक्रेटिक संगठन और क्या NGOs, हर कोई "Uniform Civil Code" रुपी रथ के वो बेलगाम घोड़ों की तरह इस रथ को अपनी-अपनी दिशा और मतिनुसार खींच रहे हैं कि इससे छूट तो पाते नहीं पर इनकी सारी उर्जा, अर्थ, सोच और योजनायें उस रथ को अपनी मनेच्छा अनुरूप खींचने में व्यय हो जाती है जबकि रथ वहीँ-का-वहीँ खड़ा है और तब से खड़ा है जब सर्वप्रथम भारतीय सविंधान लागू करते हुए खड़ा था।

क्या ये बुद्धिजीवी, चिंतक-विचारक अपनी इस कमजोरी पर ध्यान देंगे? नहीं दे सकते शायद, क्यों? क्योंकि ये अपनी जड़ों की गाद से ही नहीं निकल पाते। इन ऊपर बताये गए मुद्दों पर इतने संगठन और भिन्न-भिन्न प्रकार के विचारक खड़े हो चुके हैं कि इतने तो भारत में ना जातीय मतभेद हैं ना नश्ल और वर्ण रुपी मतभेद हैं। अब तो इनकी इस देश के प्रति साफगोई वाली चिंतक छवि और समाजसुधारक बनने की लालसा एक बहुआयामी अभिनय कलाकारों की मण्डली मात्र सा भ्रम पैदा करने लगी है|

क्या ये संगठन कभी इसपे विचरेंगे कि तुम लोग देश से उपर-अंकित बिमारियों को मिटाने की उमीदों को साकार करने के चक्कर में खुद दिग्भर्मित हो डोल रहे हो? इन संगठनों में एक-दूसरे से बात ना करने और सुनने के नाम पे इतना छुवाछूत फ़ैल चुका है कि इतना तो देश के जातीय और वर्ण तन्त्र में भी नहीं है।

मंजिल कहीं ना कहीं सबकी एक ही है, जुड़े सभी उसी रथ से हैं परन्तु पहले अपनी जड़ों की गाद को हटा पाएंगे तभी तो समझ पाएंगे कि वो रथ तो आज भी वहीँ का वहीँ खड़ा है।

क्यों नहीं इन सारी समस्याओं का हल "UCC" पे सब एक-मत हो इसको लागू करवाते? जो इन सब समस्याओं पे ऐसे फिर जायेगा जैसे बारिश धरती से ले आकाश तक छाई धुल और अंधड़ की परतों को धो, वायु से ले वातारवरण और उमस से ले धुंधलके तक को मिटा जाया करती है|

Phool Kumar Malik

Nidana Heights

Dated: 16/10/2013